सच हम नहीं; सच तुम नही

अपने हृदय का सत्य अपने आप हमको खोजना।
अपने नयन का नीर अपने आप हमको पोंछना।
आकाश सुख देगा नहीं,
धरती पसीजी है कहीं,
हर एक राही को भटक कर ही दिशा मिलती रही
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

कवि गुप्त जी इन पंक्तियों में कहना चाह रहे हैं कि हमारे हृदय को किस बात से खुशी प्राप्त हो सकता है| इस सच्चाई को हमें ही खोजना है| हमारे कष्ट किस प्रकार से दूर हो सकते हैं इसका समाधान भी हमें स्वयं ही ढूंढना है |बाहर का संसार हमें सुख नहीं दे सकता है| क्या हमारी मदद आकाश करेगा या फिर यह पृथ्वी (धरती, धरा, भूमि) हमारी इस बुरी हालत पर आंसू बहाएगी या बिल्कुल नहीं| हमें तो वही रास्ते चुनना है जिससे हमें ऊर्जा और उत्साह (खुशी) मिले |वास्तव में ना सच हम हैं ना सच तुम हो| अपितु सच तो केवल निरंतर बढ़ते रहना ही है और इसी संघर्ष से मनुष्य के जीवन में समृद्धि होता है

उदा.

स्वाध्याय

आकलन

- १) संजाल पूर्ण कीजिए :

कवि ने दिशा मिलने के सन्दर्भ में कहा है -

- आकाश सुख देगा नहीं
- धरती पसीजी है कहा

- आ) कविता की पंक्ति को पूर्ण कीजिए |
- अपने हृदय का सत्य अपने आप हमको खोजना।
- अपने नयन का नीर अपने आप हमको पोंछना।

शब्द सम्पदा

२) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ को पंक्ति के ढूंढ कर लिखिए |

१) धरती : पृथ्वी २) यथार्थ : सत्य ३)अंबर : आकाश ४)आँख : नयन

अभिव्यक्त

३) 'कर्म किए जा फल की चिंता मत करो' इस कथन इस पर अपने विचार लिखिए|

बेकार है मुस्कान से ढकना हृदय की खिन्नता।
आदर्श हो सकती नहीं तन और मन की भिन्नता।
जब तक बंधी है चेतना,
जब तक प्रणय दुख से घना,
तब तक न मानूँगा कभी इस राह को ही मैं सही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

कवि गुप्त जी इन पंक्तियों में कहना चाह रहे हैं कि अपने हृदय की उदासी को हंसी में लुप्त (छुपा) लेना व्यर्थ है क्योंकि शरीर और मन (हृदय) इन दोनों की सोच में जो अंतर है वह कभी भी आदर्श नहीं हो सकता है| जब तक हमारी चेतना (बोध,वृत्ति) जीवित है और जब तक हृदय दुख से भारी बना हुआ है तब तक मैं इस रास्ते को कभी भी उचित (सही) नहीं मानूंगा| भाव यह है कि बिना किसी लक्ष्य की प्राप्ति से जीवन में संतोष पा लेना मेरी (नियति) किस्मत नहीं है| कवि कहते हैं कि जिस उद्देश्य की पूर्ति से मनुष्य का हृदय संतुष्ट हो उसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे निरंतर संघर्षशील होना चाहिए|

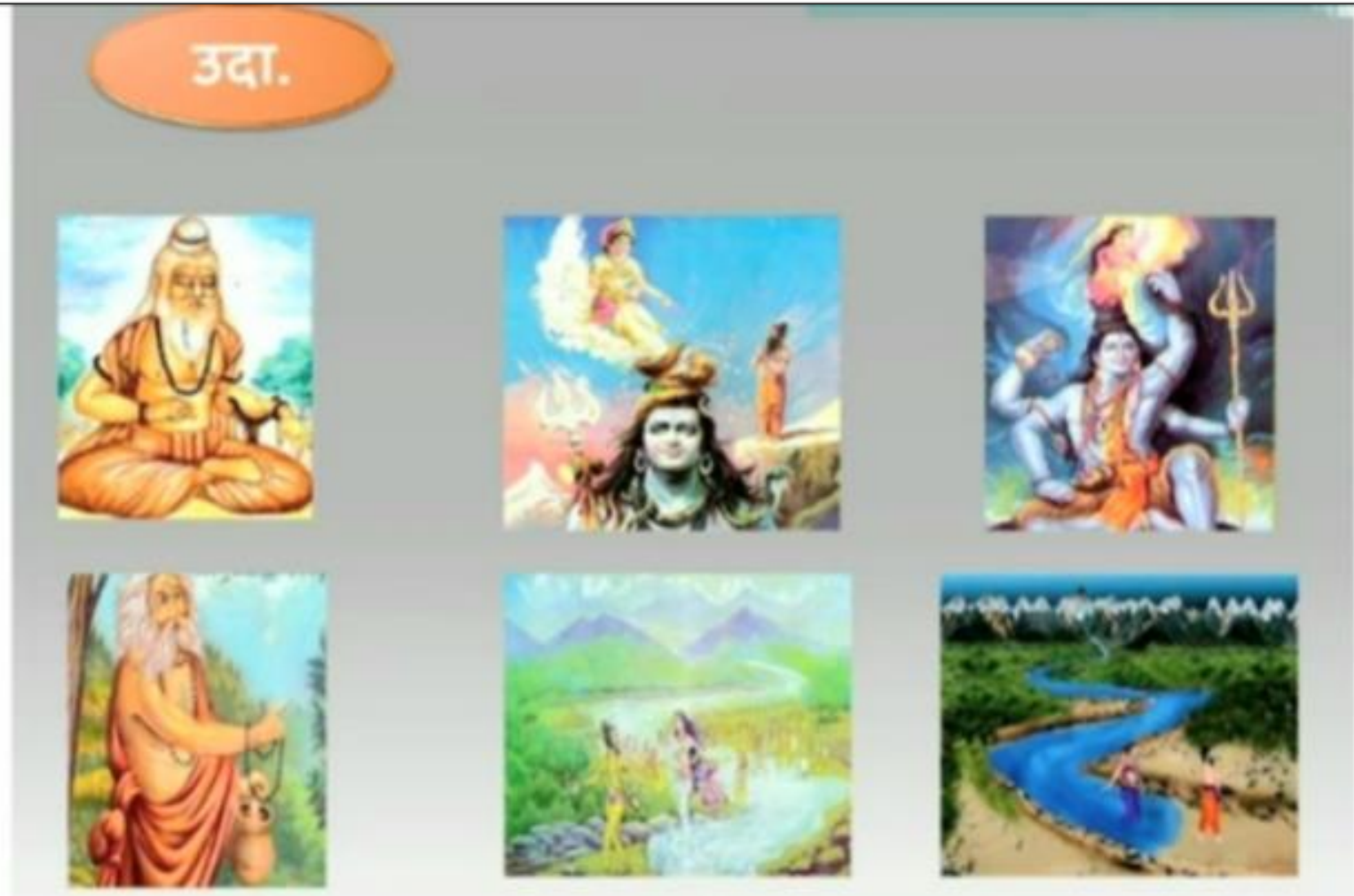
उदा.

स्वाध्याय

आकलन

- १) कृति पूर्ण कीजिए :

कवि राह को सही इसलिए नहीं मानते -

- जब तक बंधी है चेतना
- जब तक प्रणय दुःख से घना

- आ) कविता की पंक्ति को पूर्ण कीजिए |
- बेकार है मुस्कान से ढकना हृदय की खिन्नता।
  आदर्श हो सकती नहीं तन और मन की भिन्नता।

शब्द सम्पदा

२) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए |

१) खिन्नता : उदासी, चिंता २) राह : रास्ता ३) आदर्श : प्रतिमान ४) नियति : किस्मत

अभिव्यक्त'

२) ३) 'लक्ष्य की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना' इस पर अपने विचार लिखिए |

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

- रचनाकार का नाम :डॉ. जगदीश गुप्त
- पसंद की पंक्तियां : आकाश सुख देगा नहीं,
  धरती पसीजी है कहीं,
- नई कविता के रचनाकारों के नाम :रामस्वरूप चतुर्वेदी व विजय देव नरायण साही
- प्रमुख रचना :नाव के पाँव(काव्य संग्रह)शम्बूक(खंडकाव्य
- सम्मान : मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी, भारत –भारती पुरस्कार मैथली शरण गुप्त पुरस्कार

Thank you!